वैदिक विज्ञान की ओर .....

10

बढ़ती टैक्नोलॉजी न केवल सुख-सुविधाओं की अतृप्त इच्छा का परिणाम है, अपितु विज्ञान के व्यवसायीकरण का भी दुष्परिणाम है। व्यवसायी वृत्ति के लोगों ने जनमानस को सुख-सुविधाओं का ऐसा स्वप्न दिखाया है कि वह निरन्तर विलासी होकर नाना रोगों से ग्रस्त होती जा रही है और उन संसाधनों के निर्माण स्रोत उद्योगों के कारण पर्यावरण का भीषण संकट बढ़ता जा रहा है। आज विकास का पैमाना भी यह है कि जो जितनी ज्यादा ऊर्जा का खपत करता है, वह देश उतना ही अधिक विकसित माना जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि आज भोगी को विकसित तथा त्यागी को पिछड़ा माना जाता है। ऐसे में हमारे त्यागी तपस्वी महापुरुष किसके आदर्श रह पाएंगे? इन भोगों की भूख के कारण पारस्परिक भ्रातृत्व, प्रेम, करुणा, पारिवारिक व सामाजिक मूल्य नष्ट भ्रष्ट हो रहे हैं। जैसे भी बने, धन कमाकर सुविधा भोग के विकास को लक्ष्य बनाने वाला मानव मानवीय मूल्यों व सत्य धर्म के आदर्शों व कर्त्तव्यों से दूर चला गया है। फिर अपराधों को रोकने के नाना उपाय ढूंढने की मूर्खता की जा रही है। आज यन्त्रों एवं रोबोट्स के बढ़ते वेग में मनुष्य बेरोजगार हो रहा है। धनी वर्ग इन यंत्रों के सहारे कम मूल्य पर अपना कारोबार चला सकता है परन्तु संसार के करोड़ों निर्धन श्रमिक, जो अपने भरणपोषण में भी समर्थ नहीं है, उनका रोजगार नष्ट हो जायेगा, तब उनका क्या होगा? यही कारण है कि गरीब, गरीबी की ओर एवं धनी समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं? वर्ग संघर्ष का यह एक बड़ा कारण है, कहीं-२ नक्सलवाद जैसे आतंकवाद का भी यह प्रमुख कारण है। चोरी, डकैती, लूटमार को इसी समस्या ने जन्म दिया है अथवा बढ़ाया है परन्तु विज्ञान के व्यवसायीकरण के उन्माद व कथित विकास की चकाचौंध में संसार के नीति निर्धारकों, जो स्वयं सर्वसुविधा सम्पन्न ऐश्वर्यशाली हैं, को दुःखियों की आवाज सुनाई नहीं देती।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक